IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में सौंन्दर्य शास्त्र की अवधारणा

डॉ. संदीप कौर बराड, सह्ययक प्रोफेसर
गुरु नानक अध्ययन विभाग,
गुरु नानक देव विष्वविद्यालय, अमृतसर।

सौंन्दर्य शास्त्र को दर्शन शास्त्र की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया जाता है जो मनुष्य, वस्तुओं और जीवन के अनुभवों के सौंन्दर्यशास्त्र का परीक्ष्ण करता है। सौंन्दर्य शास्त्र के लिए अंग्रेजी शब्द 'Aesthetics' का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है 'मानव इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त किया गया ज्ञान'।[1] सौंन्दर्य को अंग्रेजी शब्द 'Beauty' और पंजाबी शब्द सुहज का पर्यायवाची माना जाता है। निरसंदेह, सौंन्दर्यवाद का अर्थ सुंदरता के सिद्धांत से लिया गया है लेकिन फिर भी सौंन्दर्यवाद केवल सौंन्दर्यशास्त्र को ज्ञान या सौंन्दर्य के अनुभव तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। वास्तव में सौंन्दर्य को किसी भी वस्तु में संमिलित उस गुण या अवगुण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है जो देखने वाले को स्वाभाविक रूप से अवश्य ही प्रभावित करता हो। सौंन्दर्यशास्त्र को वस्तुत पर भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रूपों में वर्गीकृत किया जाता है।

सौंन्दर्यशास्त्र को प्रकृति के मूल तत्व और मनुष्य की मानसिक स्थिति के रूप में भी स्वीकार किया जा सकता है। सौंन्दर्यशास्त्र के क्षेत्र में किसी भी कृति के विभिन्न तत्वों और उनके दोहरे संबंधों को रखकर देखा जाता है। किसी भी कृति में उसके कर्ता की मानसिक स्थिति, प्रभाव जिसके अंर्तगत उसकी रचना की गई थी और पाठक या श्रोता द्वारा इसे कैसे अनुभव किया जाता है, इसकी संपूरन प्रक्रिया सम्मिलित होती है। सौंन्दर्यशास्त्र के अध्ययन में किसी भी कृति के उस प्रत्येक दृष्टिकोण के अध्ययन पर बल दिया जाता है, जो उस रचना के सृजन के आवेग से लेकर वस्तुगत प्रभावों और संवेदनाओं के रूप में प्रकट होता है। इसके अतिरिक्त सौंन्दर्यशास्त्र में किसी भी प्रकार की कृति के रूपगत और वस्तुगत परिप्रेक्ष्य के अंर्तगत आने वाले क्रम और माध्यम का अध्ययन सम्मिलित होता है।

सौंन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन में न केवल सौंन्दर्य और उसे अभिव्यक्त करने वाले तत्वों को अध्ययन का अंग बनाया जाता है, अपितु उस दृष्टिकोण को भी अध्ययन का विषय बनाया जाता है जिसके द्वारा सृजनात्मक आवेश जागृत होता है। यह दृष्टिकोण सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी।

किसी भी कृति के सौंन्दर्य को बिंब, चिह्न, संकेत और प्रतीक आदि के माध्यम से खोजने का अन्वेषित है। किसी भी काव्य कृति में वर्णित प्रतीक, रूपक, बिंब आदि जहां उसे रूप देते हैं. वही उस कृति में सौंन्दर्य संवेदना की ऊँचाई को भी मापते हैं। सौंन्दर्य अध्ययन के मध्य किसी भी कृति के ऐतिहासिक और पौराणिक परिप्रेक्ष्य की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। सौंन्दर्यशास्त्र सम्पूर्ण रूप में अपने बाह्मी और भीतरी दृष्टिकोण को आधार बनाकर संसार के भीतरी मूल्य को सामने लाने का प्रयत्न करता है, जिसमें उसकी सुंदरता सन्निहित होती है। इस प्रकार सौंन्दर्य अध्ययन का संबंध किसी भी कार्य की समग्रता से होता है।

सिक्खों के पवित्र धर्म ग्रन्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आध्यात्मिक ज्ञान, भक्तिशास्त्र, संगीतशास्त्र, भाषाशास्त्र, समाजशास्त्र और सौंन्दर्यशास्त्र आदि विष्यों से संबंधित बाणी संमिलित हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की बाणी का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की अधिकतर बाणी राग और संगीतबद्ध हैं. अतः इस दिव्य बाणी में अनेक अवधारणाओं की प्रस्तुति के अंतर्गत उत्कृष्ट श्रेणी का सौन्दर्य भी दृष्टिगोचर होता है। इसके अतिरिक्त, इन सौंन्दर्य अवधारणाओं का उपयोग मनुष्य जीवन के मौलिक, संज्ञानात्मक, मूल्य–उन्मुख परिप्रेक्ष्य, सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को व्यक्त करने के लिए किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 59 शब्दों और 57 शलोकों के रूप में गुरु तेग बहादुर जी की संकलित बाणी का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु साहिब ने अपनी बाणी में अधिक्तर अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान की विचारधारा को ही प्रमुखता दी गई है। गुरु साहिब की बाणी उस दिव्य अनुभव का प्रतीक है जिसमें संपूर्ण मानवता के लिए भाईचारा, ज्ञान और भक्ति का संदेश दृष्टिगोचर होता है। आप जी की बाणी में "भय काहु देत नहि नहि भय मानत आनि" के ज्ञानात्मक–स्तर का मार्गदर्शन पाकर समस्त मानवता के लिए "बल होआ बंधन छूटे सब किछु होत उपाये" के मुक्तिपथ को प्राप्त करने का मार्ग प्रस्तुत किया गया है।

गुरु साहिब की बाणी में जो अवधारणा विशेष और विस्तृत रूप में प्रस्तुत की गई है, वह संसारिक वस्तुओं की नश्वरता की है, क्योंकि मनुष्य के मन का भय उसके अस्तित्व की नश्वरता है। गुरु साहिब की बाणी मानवी जीवन के वास्तविक और अपरिहार्य सत्य, नश्वरता का प्रतिनिधित्व करती है। गुरु साहिब ने इस वास्तविक और निश्चित सत्य से मनुष्य को अवगत कराने के लिए इस अवधारणा को पुनरावृत्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। गुरु तेग बहादुर जी की बाणी को एक ऐसे दर्पण के रूप में देखा जा सकता है, जो दृश्यमान् जगत में दो विषम परिस्थितियों की वास्तविकता को प्रत्यक्ष करने में सहायक है। गुरु साहिब की बाणी का अध्ययन करते समय इसमें से गुरु साहिब के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित अनेक अनुभव हमारे दृष्टिगोचर होते हैं क्योंकि गुरु साहिब ने अपने व्यावहारिक जीवन के अनुभव को भी अपनी बाणी में सग्मिलित किया है। गुरु साहिब जी की बाणी में नवीनता, संक्षिप्तता, संयम और सरलता अतियंत महत्वपूर्ण ळें

गुरु साहिब की बाणी के विषयवस्तु को देखते हुए प्रायः यही मान लिया जाता है कि इसमें मनुष्य को वास्तविक जीवन से उदासीन करने का दृढ़ प्रयास किया गया है। अपितु सत्य यह है कि गुरु साहिब के शलोकों में जीवन की नश्वरता जैसे यथार्थ सत्य को आशावादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उनका यह ढंग व्यक्ति को निराशावादी रवैया अपनाए बिना स्वाभिमानी जीवन जीना सिखाता है। गुरु साहिब की पूरी बाणी में मानवता को बार–बार उच्च स्तर के आध्यात्मिक जीवन जीने का मार्गदर्शन देकर जीवन के वास्तविक उद्देश्य से अवगत कराया गया है। गुरु साहिब के जीवन से संबंधित विवरण से, हम सुख और दुःख के समय में उनकी समभाव की अभिव्यक्ति को देखते हैं। गुरु साहिब द्वारा सांसारिक वस्तुओं की नश्वरता की वास्तविकता का उल्लेख मानव मन को उनके प्रति संतुलित दृष्टिकोण रखने के लिए जाग्रत करने के उद्देश्य से किया गया प्रतीत होता है।

निस्संदेह, गुरु साहिब की बाणी अत्यंत गम्भीरता और निरलेपता से संबंधित विषयों की प्रतिनिधता है, लेकिन फिर भी उनकी बाणी में सौन्दर्यशासत्र से संबंधित अनेक अवधारणांए हमारे दृष्टिगोचर होती हैं। ये अवधारणांए ईश्वर, आत्मा, मन, जीवन की नश्वरता, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों, नैतिकता, नाम–सिमरन और मोक्ष आदि से संबंधित हैं। गुरु तेग बहादुर जी की बाणी में जीवन के गहन रहस्यों को बताते हुए मनुष्य को सांसारिक लगाव से ऊपर उठकर समभाव से जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। इतने गम्भीर विषय पक्ष के कारण भी गुरु साहिब की बाणी में प्रकट होने वाले अनेक सौंन्दर्य भरपूर शब्दों के प्रयोग द्वारा यथार्थकता को स्पष्ट करने की विलक्षणता अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सिक्ख धर्म में ईश्वर को संपूर्ण सृष्टि का रचयिता मान कर सभी दृश्य और अदृश्य रूपों वाले अनेक प्राणियों को ईश्वर की कृति के रूप में स्वीकार किया गया है। गुरु साहिब की बाणी में संपूर्ण ब्रह्मांड के रूप में माया के पासार की प्रतिक्रिया को भी ईश्वर द्वारा अपनी दृष्टि में रखने का उल्लेख किया गया है। इस बहुलता में ईश्वर के शाश्वत अस्तित्व को स्वीकार करते हुए गुरु साहिब ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर इतने रूपों को धारण करने के उपरान्त भी समस्त सृष्टि से स्वयं को अलिप्त रखता हैः

अपनी माया आपि पासारी आपहि देखनहारा।।
नाना रूप धरे बहु रंगी सभ ते रहे नियारा।।[2]

गुरु साहिब की बाणी में आत्मा के अस्तित्व को समझाने के लिए हंस जैसे सुंदर प्राणी के बिंब का प्रयोग किया गया है। आत्मा को परमात्मा का अंश बता कर इसको मनुष्य के जीवित अस्तित्व के आधार के रूप में स्वीकार किया जाता है। मनुष्य के शरीर का वास्तविक सौंन्दर्य भी आत्मा के अस्तित्व के साथ ही संभव है, क्योंकि आत्मा की अनुपस्थिति में जीवित मनुष्य के मन में मृत शरीर के प्रति भय उत्पन्न होने के परिणामस्वरूप उसके निकट संबंधियों को उसका मृत शरीर भी भूत जैसा प्रतीत होता हैंः

घरि की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहतु संग लागी।।
जब ही हंस तजी इह काया प्रेत प्रेत करि भागी।।[3]

मनुष्य के मन को ही उसके व्यक्तित्व को अच्छा और बुरा बनाने का प्रमुख कारण माना जाता हैं। मन की चंचलता मनुष्य में अवगुणों की प्रबलता को उत्पन्न करने का कार्य करती है, जबकि इसके विपरीत मन की एकाग्रता गुणों के प्रवाह में सहायक होती है। संसार के लगभग सभी धर्मों में मन की एकाग्रता को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। मोह–माया की तृष्णा के प्रभाव में मन की स्थिति जीवों में आसक्ति पैदा करने के लिए जाग्रत होती है। गुरु तेग बहादुर जी की बाणी में माया के प्रभाव में मन की स्थिति को समझाने के लिए इसकी उपमा दीवार से जुड़ी एक अटल तस्वीर से की गई है। इसी प्रकार की स्थिति मनुष्य के मन में प्रकट होती है, जो मायावी आकर्षणों के प्रभाव में अपना अस्तित्व स्थापित करती है:

मन माया मय रमि रहियो निकसत नाहिन मीत।।
नानक मूर्ति चित्र जिउ छाडित नाहनि भीत।।[4]

गुरु तेग बहादुर जी की बाणी में मानवी मन की स्थिति को समझाने के लिए सुआन (कुत्ते) शब्द का अनेक वार प्रयोग किया गया है। सांसारिक आकर्षणों की ओर मनुष्य के मन के भटकने और एकाग्रता में ना रहने की स्थिति की तुलना कुत्ते की पूंछ सीधी न होने के लक्षण से की गई है। हमारे समाज में लोगों के मन में कुत्ते की इस चारित्रिक कहावत का दृष्टांत ऐसे व्यक्ति के लिए दिया जाता है, जिसके मन में कुप्रवृत्तियों वाले संस्कार होते हैं। गुरु साहिब की बाणी में प्रयुक्त ऐसी छवियां लोगों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं:

मदि माया कै भयो बावरों हरि जसु नहि उचरै।।
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै।।
सुआनु पूछ जिउ होइ न सुधो कहियो न कान धरै।।[5]

गुरु साहिब ने मनुष्य मन की अहंकारी प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष करने के लिए कुंचर (हाथी) के दृष्टांत का भी उपयोग किया है। स्वच्छ पानी से स्नान करने के पश्चात् हाथी फिर से अपने ऊपर मिट्टी फेंकता है। इस तरह की चेष्टा उसकी अज्ञानता को दर्शाती है, क्योंकि उसकी समझ के अनुसार जल से साफ स्नान करने की तुलना में अपने शरीर पर मलिन जल डालना अधिक लाभकारी है। ठीक ऐसी ही स्थिति उन साथकों में भी देखने को मिलती है जो अपनी साधना के प्रथम चरण में अपने व्यक्तित्व में दोषों के प्रभाव को समाप्त कर अपने मन में अपनी उपलब्धि के प्रति अभिमान का प्रभाव उत्पन्न कर लेते हैं। वास्तव में जब हम उच्च आध्यात्मिक विकास की बात करते हैं, तो यह माना जाता है कि साधक द्वारा जो कुछ भी साधनों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, उसके लिए यह श्रेष्ठ है कि वह उस उपलब्धि को अपने स्वयं के प्रयासों के परिणाम के रूप में स्वीकार न कर ईश्वरीय कृपा के रूप में स्वीकार करे। परन्तु जब साधक

ऐसी उपलब्धि को दैवी कृपा के स्थान पर व्यक्तिगत प्रयास के रूप में स्वीकार करता है तो वह फिर से अहंकार की उसी स्थिति में पहुँच जाता है, जिसका अस्तित्व प्रारंभिक अवस्था में समाप्त हो गया था। मनुष्य के मन की ऐसी अवस्था के लिए कुंचर (हाथी) के स्नान का चित्रण गुरु साहिब के सौंन्दर्य के गहन पक्ष को प्रकट करता हैः

तीर्थ बरत अर दान करि मन मै धरै गुमानु।।
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु।।[6]

प्रत्यक्ष संसार और मानव जीवन दोनों का वास्तविक सत्य नश्वरता और परिवर्तन है। संसार की प्रत्येक वस्तु स्थिर नहीं है और इसका कण–कण गतिमान है, जबकि ईश्वर का निश्चित अस्तित्व स्वीकार किया गया है। यह स्वयंसिद्ध सत्य है कि संसार में प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व का काल निश्चित रूप से काल के अधीन होता है। संसार की नश्वरता के लिए गुरु साहिब ने अनेक बार जिस मुख्य रूपक का प्रयोग किया है, वह स्वप्न है। नींद की अवस्था में व्यक्ति स्वप्न को वास्तविकता के रूप में अनुभव करता है, लेकिन जाग्रत अवस्था में स्वप्न की अवस्था को मिथ्या और अर्थहीन मानते हुए इसको स्वप्न का रूप होने के कारण अस्वीकार कर दिया जाता हैः

नानक कहत जगत सब मिथ्या जियो सुपना रैनाई।।[7]
एह जग है संपति सुपने, की देख कहा अैडानो।।[8]
सगल जगत है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार।।[9]

गुरु साहिब की बाणी में बादलों की छाया की अस्थिरता, पानी से उठने वाले बुलबुलों का अस्तित्व, धुएं के पहाड़, रेत की दीवार आदि के बिंब की सौंन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति भी की गई है। इन पदार्थों की नश्वरता की तरह सांसारिक पदार्थों की नश्वरता का यथार्थक सत्य भी हमारे सामने प्रकट होता है। धुएँ और बादलों के पासार के समान प्रत्यक्ष जगत् का जो अस्तित्व दिखाई देता है, उसका प्रभाव हमारी आँखों में स्पष्टतः दिखाई तो देता है, परंतु यह अस्तित्व कभी भी स्थायी नहीं हो सकता। गुरु साहिब की बाणी में संसार के मिथ्या स्वरुप को अस्वीकार करते हुए इसकी यथार्थता को स्वीकार करने के भ्रम को प्रस्तुत करने के लिए इन प्रतीकों का अनेक बार प्रयोग भी किया गया हैः

इह जग धुएँ का पहार।।[10]
जो दीसै सो सगल बिनासै जियो बादर की छाई।।[11]
जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।।[12]

गुरु साहिब की बाणी में विश्व की अस्थिरता को आध्यात्मिक दृष्टि से अभिव्यक्त कर इसकी नश्वरता को सूक्ष्म प्रवाह से जोड़कर एक दार्शनिक विचार के रूप में भी प्रकट किया गया है। साधारण रुप में यह देखा जा सकता है कि जिस प्रकार भूतकाल से एक निश्चित समय के बाद वर्तमान काल में प्रवेश होता

है, उसी प्रकार वर्तमान काल का भविष्य काल में संक्रमण एक वास्तविकता है। समग्र रूप से, यदि विश्व की नश्वरता की पुनरावृत्ति को देखा जाए और इससे उपरामता धारण करने के स्थान पर, यदि विभिन्न प्रतीकों जिसमें पानी के बुलबुलों, धुएँ के पहाड़, रेत की दीवार आदि के माध्यम से सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को समझ लिया जाए, तो नश्वरता की जिस अवधारणा को गुरु साहिब मनुष्य को नीरस भावनाओं के प्रभाव से अलग करके अपनी बाणी में प्रस्तुत करते हैं, वे अवधारणाएँ मनुष्य को समभाव में रखने के लिए कार्य करती है।

गुरु साहिब की बाणी में दृष्टमान जगत को नाशवान बताने के साथ–साथ वैराग्य भाव को भी बहुत कुशलता से अभिव्यक्त किया गया है। वस्तुतः संसार को माया का परपंच मानकर इसकी नश्वरता के अटल सत्य को स्वीकार करने के लिए बाणी में अनेक बार सांकेतिक शब्दावली का प्रयोग भी किया गया है। माया के परिवर्तनशील रूप की तरह ही जगत् को भी पूर्ण रूप में सत्य न मानकर इसके परिवर्तनशील रूप को अधिक प्रकट किया गया है। वास्तव में, गुरु साहिब का उदेश्य मानव जीवन को निर्भयता और समदृष्टि की जिस अवधारणा को अपनाने के लिए प्रेरित किया है, उसके लिए वैरागय भावों की उत्पत्ति अतियंत आवश्यक है। वैरागय के इस भाव की उत्पत्ति मिथ्या की वास्तविकता को जानने से ही संभव हो सकती हैः

नानक कहत जगत सभ मिथ्या ज्यों सुपना रैनाई।।[13]

गुरु साहिब ने अपनी बाणी में विषय वस्तु के महत्व को देखते हुए अनेक पौराणिक पात्रों के जीवन से सम्बन्धित विस्तृत पौराणिक कथाओं को संक्षिप्त शब्दों में संप्रेषित कर मनुष्य को जीवन के प्रति मार्गदर्शन प्रदान किया है। गुरु साहिब द्वारा पौराणिक कथाओं के संकेतों का प्रयोग करने का उद्देश्य इन पात्रों के माध्यम से आम समूह को वास्तविक सत्य से अवगत कराना हो सकता है, क्योंकि ये कहानियाँ पहले ही लोगों की मानसिकता में अपना अस्तित्व स्थापित कर चुकी थीं। यह भी उल्लेख किया गया है कि राम और रावण जैसे पात्रों के जीवन का अस्तित्व समय के अधीन है और समय की एक निश्चित अवधि में उनका जीवन भी समाप्त हो गया थाः

राम गयो रावण गयो जा कउ बहु परवार।।
कहु नानक थिर कछु नही सुपने जयों संसार।।[14]

गुरु साहिब की बाणी में मनुष्य पर माया के प्रभाव को कुमति के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके प्रभाव में किये जाने वाले मानवीय कार्यों की उपमा (कुत्ते) जानवर से भी की गई है। जिस प्रकार कई घरों के बाहर जाकर भी कुत्ते का आवारापन नहीं मिट सकता और उसके भटकने से मनुष्य के मन में घृणा की भावना उत्पन्न होती है। मायावी प्रभावों के अधीन रहने वाले मनुष्य की स्थिति भी दूसरों द्वारा की जाने

वाली निंदा का कारण बनती है। गुरु साहिब की बाणी में कुत्ते के बिंब का अनेक बार प्रयोग किया गया है:

दुआरहि दुआरि सुआन जयो डोलत नह सुध राम भजन की।।[15]

गुरु साहिब ने मनुष्य के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को अपनी बाणी में व्यक्त करते हुए मानवीय अंगों के प्रभावहीन होने का उल्लेख जिस प्रकार किया है, वह अपने आप में अपरिवर्तनीय सत्य को सौंन्दर्यपूर्ण तरीके से व्यक्त करने का एक रहस्यमयी पक्ष है। वर्तमान क्षण को वास्तविक सत्य के रूप में अनुभव करना भी मनुष्य के स्वभाव का एक भाग है। कदाचित् यही कारण है कि गुरु साहिब ने अपनी बाणी में मनुष्य की वृद्धावस्था की स्थिति का भी उल्लेख किया है, जिसमें उसे अपने शरीर के अंगों की निष्क्रियता के कारण दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। गुरु साहिब ने ऐसी अवस्था का कलात्मक रूप में वर्णन करते हुए सिर का कांपना, पैरों का डगमगाना और वृद्धावस्था में आंखों की रोशनी समाप्त हो जाने जैसे बिंबों का प्रयोग कर दूसरों पर निर्भर होने वाली शरीर की स्थिति को प्रस्तुत किया है। बुढ़ापे को मृत्यु के कारण के रुप में स्वीकार किया जाता है, यदि बुढ़ापा है तो मृत्यु निश्चित है, क्योंकि समस्त कार्य काल के चक्र में घटित होते है:

सिर कंपियो पग डगमगे नैन जोत ते हीन।।
क्हु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन।।[16]

गुरु साहिब की बाणी में मानव जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में नाम–सिमरन के विशेष महत्व का कई बार उल्लेख किया गया है। विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से, गुरु साहिबान और उनके अनुयायियों द्वारा बाणी का जाप करते हुए निडरता से राजसी अत्याचार का सामना करने एवं स्थिर अवस्था में रहने के कई संदर्भ भी हमारे सम्मुख प्रकट होते है। नाम–सिमरन के महत्व को स्पष्ट करने के लिए, गुरु साहिब ने अपनी बाणी में द्रौपदी के संकट हरण की पौराणिक कथा का भी उल्लेख किया है, जिसमें द्रौपदी द्वारा शाही दबाव के सामने असहाय महसूस करते हुए अपने सम्मान को बनाये रखने के लिए अपना ध्यान ईश्वर (श्री कृष्ण) के सिमरन में लगाया गया था। जब मनुष्य किसी भी प्रकार के अन्याय में किसी विवशता के कारण स्वयं को असहाय अनुभूत करता है, तब ईश्वर का ध्यान उसे अपने गरिमापूर्ण अस्तित्व में अवश्य ही सहायक प्रतीत होता है:

पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई।।
ता को दूःख हरियो करूणा मै अपनी पैज बढाई।।[17]

गुरु तेग बहादुर जी ने गुरु नानक देव जी द्वारा आरंम्भ किए गए उद्देश्य को आगे बढ़ाते हुए सिख धर्म का नेतृत्व किया और अपने विचारों, आदर्शों और संस्कृति की रक्षा के लिए उस समय की जनता को बलिदान देने की प्रेरणा को परिपुष्ट किया। गुरु साहिब द्वारा दी गई शहादत मानवतावाद के स्वतंत्र सिद्धांतों की स्थापना के लिए थी। गुरु साहिब द्वारा प्रस्तुत धार्मिक आदर्श किसी विशेष वर्ग या श्रेणी के लिए नहीं अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए है। गुरु साहिब ने अपनी बाणी के माध्यम से नश्वरता के गूढ़ रहस्य को सत्य के रूप में जिस गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है, उसने सिख धर्म के अनुयायियों को आने वाले समय का बहादुरी से सामना करने और उनके अंदर त्याग की भावना जाग्रत करने के लिए प्रेरित करने का काम भी किया है। गुरु साहिब के व्यवहारिक जीवन और विचारधारा के प्रभाव को सिक्खों द्वारा निरंतर अन्याय से भरी राजसी शक्तियों के साथ संघर्ष करते समय स्वयं को महत्व न देकर जाग्रत रूप में भी समुह को अधिक महत्व देने में देखा जा सकता है।

संदर्भ

1. सुरिंदर सिंह कोहली, पंजाबी साहित्य दा विश्वकोश।
2. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ–537.
3. वही, पृष्ठ–634.
4. वही, पृष्ठ–1428.
5. वही, पृष्ठ–536.
6. वही, पृष्ठ–1428.
7. वही, पृष्ठ–1231.
8. वही, पृष्ठ–1186.
9. वही, पृष्ठ–638.
10. वही, पृष्ठ–1187.
11. वही, पृष्ठ–1231.
12. वही, पृष्ठ–1427.
13. वही, पृष्ठ–1231.
14. वही, पृष्ठ–1428.
15. वही, पृष्ठ–411.
16. वही, पृष्ठ–1428.
17. वही, पृष्ठ–1008.